बक्सीस

अफ़सल जमाल
(एम्-ए- इंग्लीश-I इयर)

उस दिन प्लाटफाँम पर कुछ ज़्यादा ही भीड़ थी। लोग अपने अपने सामान लेकर इधर उधर इकट्ठे हुए थे। सवेरे की रोशनी धीरे धीरे फैल रही थी। चायवाला अपने काम में जुटा हुआ था। यात्रियों की भीड को देख चायवाला बहुत खुश नज़र आ रहा था।

प्लाटफाँम के एक कोने में एक बूढ़ी औरत अपनी छडी लेकर बैठी थी। उसकी आँखों किसी का इंदज़ार कर रहीं थी। दूर से रेलगाडी की राह देख रही थी, उसकी कमज़ोर और थकी हुई आँखें। उसके कपडे फटे हुए थे।

रेलगाडी के आने की सूचना देनेवाली घंटी बजी तो यात्री सामान लेकर सावधान होने लगे। उसी वक्त कहीं से एक बच्च भागता हुआ रेल के पास आया कि उसकी माँ ने लपककर उसे पकड लिया। यह देख उसी बूढ़ी औरत की आँखें भर आयीं।

दूर से रेल गाडी दिखाई देने लगी तो वह अपनी छडी उठाकर स्वयं उठने की कोशिश करने लगी। थोडी सी मुश्किल सहकर वह उठ खडी हो गयी।

गाडी प्लाटफाँम पर आकर रूकी तो लोग उसपर चढने इधर उधर भागने लगे। बूढी अपने माथे पर हाथ सटाकर भीड को देखने लगी। उसकी आँखें किसी की तलाश में लोगों के बीच घूम रही थीं। इतने में गाडी फिर खाना होने लगी। दो तीन जैवान चलती गाडी पर दौडकर चढने लगे। उस बुढिया की परवाह करनेवाला कोई नहीं रहा। बुढिया मायूस होकर एक बेंच पर बैठ गयी।

-बैठे बैठे वह ख्यालों में डूब गयी।

उस औरत का नाम था माया। उसका पति था राम।

उनको इकलौता बेटा था किशन। पहाड की तलहटी पर अपने पति और बेटे के साथ वह काफी खुश रहती थी। राम हर सुबह खेती बाड़ी करने निकलाता और शाम तक लौट आता। माय किशन को स्कूल भेजने के बाद ठाकुर कहता- तू देखना, बडा होकर हमारा किशन हमारी देख भाल करेगा।

एक दिन रात होने के बाद भी राम घर नहीं लौटा। माया किशन के साथ खेत की ओर दौडी। वहाँ उसने अपने प्रियतम को मरा पडा पाया। माया बैहोश होकर गिर पडी।

राम को मरे अब बारह साल हुए। किशन अब कालेज में पढता है। एक दिन वह खुशी से झूमता हुआ आया और बोला कि उसे डाक्टरी पढने का मौका हासिल हुआ है। माया इतनी खुश हो गयी थी मानो वह आसमान में उड ही हो।

किशन ने माया से कहा कि उसे पढाई के सिलसिले में शहर जाके रहना पडेगा और काफी कुछ पैसों की ज़रूरत भी होगी। बहुत सोचने के बाद माया ने अपनी छोटी सी, पर प्यारी झोंपडी बेचने का निश्चय किया। यों किशन की पढाई का बेदोबस्त हो गया। मगर माया होगयी बेघर।

एक दिन किशन की लौटने की खबरखाली चिट्ठी माया को मिली। खत में और भी कुछ लिखा था। पर आनन्द से भर पूर माय आगे पढना भूल गयी।

गाडी आने की घण्टी फिर बजी तो माया ख्यालों से मुक्त हो गयी और पहले की तरह छडी के सहारे उठने लगी। इस वक्त भीड काफी अधिक रही। बडी आवाज़ के साथ गाडी रूकी। माया किशन को देखने तडपने लगी। अचानक भीड में एक नौजवान तेजी से जाता हुआ नजर आया। माया ने जोर से पुकारा 'किशन अरे ओ किशन'।

वह किशन ही था। माया उसे देख रोने लगी। उसने किशन से कहा। चल बेटा, चलते है।

'कहाँ?' चलने केलिए कौन सी जगह पडी है। मैं ने चिट्ठी में साफ लिखा या कि जल्दी लौट जायेंगे। क्या तुमने पढा नहीं?

माया को तभी याद आया आकर किशन से बोली-

'किशन चलो भी। तुम क्यों इस भिखारिन से बातें करके वक्त बरबाद करते हो चलो जल्दी करो। देर हो रही है।

किशन उस युवती के साथ चलने लगा। मायाने उस लडकी को पहचान लिया। वह ठाकुर साहब की बेटी थी।

माया तब भी मन ही मन किशन को शुभकामनाएँ दे रही थीं। उसकी आँखों से अब आँसू नहीं बह रहे थे।

अचानक दो आदमी दौडकर आये और माया को धक्का मार के गिराकर चल दिये। माया गिर पडी। छडी उसके हाथ से कुछ दूर जा गिरी। माया सरककर छजी के पास पहूँची और काँपते हाथ से उसे छूने लगी। वही उसका सहारा है। उस छडी को जोर से पकडते हुए उसने पूछा-

-'क्या तू भी किशन की तरह मुझसे जुदा होना चाहता है? पर मैं तो नहीं चाहती।

अब माया की आँखों से आँसू नहीं बल्कि खून ही बहने को तैयार थे।